वैदिक व्याख्यान माला — ३७ वाँ व्याख्यान

[अश्विनौ देवताके मन्त्रोंका निरीक्षण]

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमन्त्रीके कार्य और व्यवहार

[३]

[यह व्याख्यान नागपूर विश्वविद्यालयमें ता. ३१-१२-५७ के दिन हुआ था]

लेखक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

साहित्य-वाचस्पति, वेदाचार्य, गीतालङ्कार

अध्यक्ष- स्वाध्याय मण्डल

स्वाध्यायमण्डल, पारडी

मूल्य छः आने

ॐ

[अश्विनौ देवताके मन्त्रोंका निरीक्षण]

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमन्त्रीके कार्य और व्यवहार

[तीसरा व्याख्यान]

अश्विदेवोंके कार्य

१ कविको दृष्टि दी

'कवि' नामका एक ऋषि था। वह अन्धा था। उसको अश्विदेवोंने दृष्टि दी। इस विषयमें नीचे दिया मंत्र देखने योग्य है—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।

उतो कविं पुरुभुजा युवं ह
कृपमाणं अकृणुतं विचक्षे ॥ ऋ. १।११६।१४

'बडे हाथवाले अश्विदेवो! तुम्हारी कृपाकी इच्छा करनेवाले (कविं) कवि नामक ऋषिको (वि-चक्षे अकृणुतं) विशेष देखनेके लिये उत्तम दृष्टि युक्त किया।' इसमें कवि ऋषि अन्धा था, या उसको दीखता नहीं था, उसको देखने योग्य बनाया। अश्विदेवोंने उसकी आंखें ठीक की, जिससे वह विशेष रीतिसे देखने योग्य हो गया।

२ ऋज्राश्वको दृष्टि रखी

ऋज्राश्व अन्धा हुआ था, पहिले इसके आंख ठीक थे, पर पीछेसे उनके आंख पिताने बिगाडे, वे अश्विदेवोंने ठीक किये। देखिये-

कक्षीवान् दैर्घतम औशिजः।

शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानं
ऋज्राश्वं तं पिताऽन्धं चकार।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष
आधत्तं दस्रा भिषजौ अनर्वन् ॥

ऋ. १।११६।१६

'(वृक्ये शतं मेषान् चक्षदानं) वृकीको सौ भेडोंको खानेके लिये देनेके अपराधसे (तं ऋज्राश्वं) उस ऋज्राश्वको (पिता अन्धं चकार) पिताने अन्धा बना दिया। हे (नासत्या दस्रा भिषजा) सत्य मार्ग बतानेवाले, शत्रु निवारक वैद्यो! (तस्मै अनर्वन् अक्षी) उस ऋज्राश्वके लिये प्रतिबंध रहित दोनों आंखें (विचक्षे आ अधत्तं) विशेष रीतिसे देखनेके लिये तुमने लगा दीं।'

यहां 'भिषजौ' पद है, औषधोंसे चिकित्सा करनेवालोंका वाचक यह पद है। यहां औषधचिकित्सा करके अश्विदेवोंने उसकी आंखें ठीक की ऐसा इससे प्रतीत होता है। ऋज्राश्व मेषोंका रक्षण कर रहा था। भेडियेने सौ मेष खाये तो भी उसने पर्वाह नहीं की, इससे उसके पिताको बहुत क्रोध आया और उसने उसके मुखपर कुछ मारा होगा, जिससे ऋज्राश्वकी आंखें फूट गयीं। अश्वीदेवोंनें औषधोपचारसे उसकी आंखें ठीक की, सब आंखोंके दोष दूर किये और उत्तम दृष्टि उनकी आंखोंमें रहे ऐसा किया। 'अधत्तं' पद मंत्रमें है, यह विशेष महत्त्वका पद है। बाहरसे वस्तु लाकर उसको नेत्रके स्थानमें आधान करनेका भाव यहां दीखता है।

'नासत्यौ' पद (न+असत्यौ) है। जो कभी असत्य नहीं होते, जिनका इलाज यशस्वी होता है। 'दस्रा' पद भी दोषोंका नाश करनेके अर्थमें है। शत्रुको दूर करनेवाले, आंखमें जो विषमता हो गयी थी, उसको दूर करनेवाले ये चिकित्सक हैं।

'अनर्वन् अक्षी' प्रतिबंध रहित आंख, जिनमें बिगाड या दोषकी संभावना नहीं है, ऐसे दो आंख (वि-चक्षे) विशेष रीतिसे देखनेकी क्रिया करनेके लिये (आ धत्तं) स्थापन किये। पिताने ऋज्राश्वको क्रोधसे अन्धा बनाया था, क्योंकि ऋज्राश्व मेषोंको वृकी खाती थी उसको रोकता नहीं था। सौ मेष वृकीने खाये, यह ऋज्राश्व देख रहा था, पर वृकीको प्रतिबंध करता नहीं था। इससे पिता क्रोधित हुआ और उसने अपने पुत्रको अन्धा बना दिया। अर्थात् पिताने पुत्रकी आंखें फोड दी। इस कारण दोनों आंखोंसे ऋज्राश्व अन्धा बन गया।

वह ऋज्राश्व अश्विदेवोंके पास चला गया। अश्विदेवोंने उसके दोनों आंखोंमें (अक्षी आ अधत्तं) दो नेत्र बिठला दिये। 'आ धा' धातुका अर्थ 'स्थापन करना, आधान करना, लगा देना' है। अर्थात् 'ये आंख बाहरसे लाकर लगा दिये, यह भाव यहां है। 'तस्मै अक्षी आधतं' उस ऋज्राश्वके लिये दो आंख लाकर लगा दिये और औषधोपचारसे उस स्थानके सब दोष दूर कर दिये।

यह कार्य शस्त्रक्रिया तथा औषधोपचारका है ऐसा प्रतीत हो रहा है। आजकल एकके आंख अथवा कृत्रिम आंख दूसरेको लगा देते हैं, वैसा ही यह कार्य दीख रहा है। मरे हुएके आंख निकालकर दूसरेके आंखमें लगा देते हैं। वैसा किया होगा अथवा बनावटी आंख लगा दिये होंगे। 'आ अधत्तं' यह क्रिया आधान कर्म बता रही है। यही बात नीचे दिये मंत्र बता रहा है—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।

शतं मेषान् वृक्ये मामहानं
तमः प्रणीतं अशिवेन पित्रा।
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनौ अधत्तं
ज्योतीः अन्धाय चक्रथुः विचक्षे।

ऋ. १।११७।१७

'सौ मेषोंको वृकीको खानेके लिये प्रदान करनेवाले ऋज्राश्व नामक पुत्रको अहितकारी पिताने अन्धा बना दिया। हे अश्विदेवो! उस ऋज्राश्वके लिये तुमने दोनों आंखें बिठला दी और उस अन्धेको देखनेके लिये ज्योति बना दी।'

इस मंत्रमें 'तस्मै ऋज्राश्वे अधी आधत्तं, अन्धाय विचक्षे ज्योतीः चक्रथुः' उस ऋज्राश्वके लिये दोनों आंखोंका आधान किया, और उस अन्धेके लिये देखनेके हेतुसे ज्योती दान की। यहां भी 'अक्षी आधत्तं' अर्थात् आंख लाकर लगा दिये ऐसा कहा है यह शस्त्रक्रियासे होनेवाला कार्य है। तथा 'अन्धाय विचक्षे ज्योतीः चक्रथुः।' अन्धेके आंखोंमें ज्योती निर्माण की यह औषध प्रयोगसे भी होगा।

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।

चित् ही रिरेभ अश्विना वां
अक्षी शुभस्पती दन्॥

ऋ. १।१२०।६

'हे अश्विदेवो! हे शुभकर्म करनेवालो! (अक्षी आदन्) दोनों आंखें प्राप्त करके (वां रिरेभ) मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं।' जिसने दोनों आंखें पुनः प्राप्त की वह अश्विदेवोंकी प्रशंसा करता है। जिस वैद्यने नयीं आंखें लगा दीं उसकी प्रशंसा रोगी अवश्य ही करता रहेगा।

इस तरह आंखोंको ठीक करने, नयीं आंखें लगाने और नयी ज्योती आंखमें उत्पन्न करनेके विषयमें वेदमंत्रमें वर्णन है।

३ अंधे और लूलेको ठीक करना

एक ऋषि अन्धा और लूला था। अश्विदेवोंने उसका आन्धापन दूर किया और लूलापन भी दूर करके उसको चलने फिरने योग्य बना दिया। इस विषयमें यह मंत्र देखने योग्य है—

कुत्स आंगिरस ऋषिः।

याभिः शचीभिः वृषणा परावृजं
प्रान्धं श्रोणं चक्षसे एतवे कृथः॥

ऋ. १।११२।८

'(हे वृषणा अश्विना!) हे बलवान् अश्विदेवो! (याभिः शचीभिः) जिन शक्तियोंसे तुमने (अन्धं परावृजं) अन्धे

परावृजको (चक्षसे प्रकृथः) दृष्टिसे संपन्न किया और (श्रोणं एतवे कृथः) लंगडे-लूलेको चलने फिरने योग्य बना दिया । '

यह भी शस्त्रक्रियाका कार्य दीखता है । लंगडे-लूलेके पांव ठीक किये यह शस्त्रकर्म है । शस्त्रकर्मके पश्चात् जखमें भरनेके लिये औषधीप्रयोग किये होंगे । परावृज ऋषि अन्धा भी था और लूला भी था । इसका अन्धापन दूर किया और इसके पांव भी दुरुस्त किये ।

ऋज्राश्वकी केवल आंखें ठीक करनेका कार्य था । उसको नई आंखें लगा दी । परंतु परावृजकी आंखें दुरुस्त की (अन्धं चक्षसे कृथः) अंधेको देखनेके लिये योग्य बना दिया और (श्रोणं एतवे कृथः) लूले-लंगडेको चलने फिरने योग्य बना दिया ।

यहां नयी आंख लगानेका उल्लेख नहीं, परंतु जो आंख थी वही ठीक करनेका वर्णन है । इसलिये यद्यापि ये दोनों आंख ठीक करनेके वर्णन हैं, तथापि उपचारपद्धति पृथक् पृथक् है। यह यहां विशेष रीतिसे और सूक्ष्म रीतिसे देखना योग्य है ।

४ कण्वको दृष्टि दी

कण्वको दृष्टि देनेका वर्णन वेदमें है वह यहां देखिये--

हिरण्यस्तूप आंगिरस ऋषिः ।

याभिः कण्वं अभिष्टिभिः प्रावतं युवं अश्विना ।
ताभिः ष्वस्मां अवतं शुभस्पती पातं सोमं
ऋतावृधा ॥ ऋ. १।४७।५

' जिन शक्तियोंसे तुमने, हे अश्विदेवो ! कण्वकी रक्षा की उन शक्तियोंसे तुम हमारी रक्षा करो । और सोमपान करो । ' तथा—

कुत्स आंगिरसः ।

याभिः कण्वं प्र सिषासन्तं आवतं
ताभिः ऊ षु ऊतिभिः अश्विना गतम् ॥
ऋ. १।११२।५

' जिन साधनोंसे स्तुति करनेवाले कण्वकी तुमने सुरक्षा की, उन रक्षा साधनोंसे तुम हमारे पास आओ । ' तथा—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः ।

महः क्षोणस्य अश्विना कण्वाय
प्रवाच्यं तत् वृषणा कृतं वां
यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ॥ ऋ. १।११७।८

' हे अश्विदेवो ! तुमने अन्धे कण्वको दृष्टि दी और नार्षदको श्रवणकी शक्ति दी, यह वर्णनके योग्य कर्म तुमने किया । ' कण्वको चक्षु दिये इस विषयमें नीचे लिखा मंत्र अधिक स्पष्ट है—

युवं कण्वाय अपिरिताय चक्षुः प्रत्यधत्तम् ।
ऋ. १।११८।७

तुमने अन्धे कण्वको चक्षु दिये । तथा यही बात और भी कही है—

ब्रह्मातिथिः काण्व ।

युवं कण्वाय नासत्या अपिरिताय हर्म्ये ।
शश्वदूतीदंशस्यथः ॥ ऋ. ८।५।२३

हे अश्विदेवो । तुमने (अपिरिताय कण्वाय) दुःखी कण्वको (हर्म्ये) महलमें रखकर शाश्वत संरक्षण दिया । '

तथा और—

यथा चित् कण्वं आवतं ॥ ऋ. ८।५।२५

जैसी तुमने कण्वकी रक्षा की । इसमें कण्व (हर्म्ये) महलमें था, दृष्टि न होनेसे दुःखी था, उसको दृष्टि दी और उसकी सुरक्षा की ।

कण्व ऋषि था । बडे गृहमें रहा था । ' महाशाला, महाश्रोत्रियाः ' ऐसा ऋषियोंका वर्णन आता है । ऋषि झोंपडीमें नहीं रहते थे, विशाल मकानमें ही रहते थे । क्योंकि उनके पास सैकडों युवक विद्या सीखनेके लिये आते थे । वे सब झोंपडीयोंमें कैसे रहेंगे ? ' हर्म्ये ' पदसे विशाल मकानका बोध होता है और वह योग्य है ।

५ कलिको तरुण बनाया

कुत्स आंगिरसः ।

कलिं याभिः वित्तजानिं दुवस्यथः ॥
ऋ. १।११२।१५

(वित्त-जानिं कलिं) जिसको स्त्री प्राप्त है अर्थात् जो विवाहित हुआ है उस कलिकी सुरक्षा की । यह कलि वृद्ध हुआ था उसको तरुण बनाकर अश्विदेवोंने उसकी रक्षा की । इस विषयमें देखिये—

जमदग्नि भार्गवः ।

युवं विप्रस्य जरणां उपेयुषः
पुनः कलेः अकृणुतं युवद्वयः ॥ ऋ. ८।१०१।८

' (जरणां उपेयुषः) वृद्धावस्था प्राप्त हुए (कलेः)

कलिको (पुनः युवत् वयः अकृणुतं) पुनः यौवनकी आयु प्रदान की। '

जिस तरह च्यवनके विषयमें विस्तारसे तरुण बननेका वृत्त कथन किया है वैसा कलिके विषयमें नहीं किया, परंतु ' वृद्धको तरुण बनाया ' इतनी बात तो अत्यंत स्पष्ट है। यह च्यवनके तरुण बनानेके समान ही है।

६ साहदेव्यको दीर्घायु किया

वामदेवो गौतमः।

एषा वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः।
दीर्घायुः अस्तु सोमकः ॥ ९ ॥
तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम्।
दीर्घायुषं कृणोतन ॥ १० ॥ ऋ. ४।१५।९-१०

' हे अश्विदेवो ! तुमने सहदेव कुमार सोमकको दीर्घायु किया। ' अर्थात् यह कुमार बीमार या मरियल-सा था इसको हृष्टपुष्ट बनाकर दीर्घायु किया।

यह औषधिप्रयोगका कार्य है। कुमारको दीर्घायु बनानेका अर्थ कुमार अति कृश और मरणोन्मुख था उसको बलवान् बनाकर दीर्घायु किया ऐसा स्पष्ट है।

७ श्यावको दीर्घायु किया और पत्नी दी

युवं श्यावाय रुशतीं अदत्तं। ऋ. १।११७।८

' तुमने श्यावको तेजस्विनी पत्नी दी। ' अर्थात् उसके लिये सुंदर पत्नी दी। यह श्याव शरीरमें तीन स्थानपर खंडित था। देखिये—

त्रिधा ह श्यावं अश्विना विकस्तम्।
उत् जीवसे ऐरयतं सुदानू ॥ ऋ. १।११७।२४

' हे अश्विदेवो ! (त्रिधा विकस्तं श्यावं) तीन स्थानोंपर जखमी हुए श्यावको (जीवसे उत् ऐरयतं) दीर्घ जीवनके लिये तुमने ऊपर उठाया। ' और ऐसे पुरुषको ठीक करके उसका विवाह सुन्दर स्त्रीके साथ कर दिया और उसको दीर्घ आयु भी दी।

यह श्याव शरीरमें तीन स्थानोंपर टूटा हुआ था। बडी जखमें हुई थी। इनको ठीक किया, घाव ठीक किये, उसका शरीर अच्छा किया, सामर्थ्यवान् किया, दीर्घ आयुवाला किया और उसका विवाह भी सुन्दर तरुणीके साथ किया।

इसमें शरीरपरके घाव दुरुस्त करना, उससे शरीरमें जो दोष हुए हों ये दूर करने, शरीर सामर्थ्यवान् करना और विवाह करके गृहस्थ धर्ममें सुखसे रहने योग्य बनाना ये सब कार्य हैं।

८ वंदनका रक्षण और दीर्घायुकी प्राप्ति

वन्दनका बचाव अश्विदेवोंने किया था इसका निर्देश नीचे लिखे मंत्रोंमें देखिये—

उत वन्दनं ऐरयतं स्वर्दृशे ॥ ऋ. १।११२।५

' अपनी दृष्टि प्राप्त करनेके लिये वन्दनको ऊपर उठाया। ' अर्थात् वन्दन गिर गया था उसको ऊपर उठाया और उसको अपनी (स्वर्दृशे) दृष्टि-अपने आंखोंसे प्रकाश देखनेकी स्थिति प्राप्त होनेके लिये जो करना आवश्यक था, वह अश्विदेवोंने किया। इसी विषयमें और देखिये—

तत् वां नरा शंस्यं राध्यं च
अभिष्टिमत् नासत्या वरूथम्।
यद् विद्वांसा निधिमिव अपगूळहं
उद् दर्शतात् ऊपथुः वन्दनाय ॥
ऋ. १।११६।११

(हे नरा नासत्या) हे नेता अश्विदेवो ! (वां तत् अभिष्टिमत् वरूथं) वह तुम्हारा स्पृहणीय और आदरणीय (शंस्यं राध्यं) प्रशंसनीय तथा पूज्य कार्य है। हे विद्वानो ! (यत्) जो (अपगूळहं निधिं इव) गुप्त खजानेके समान (दर्शनात्) देखने योग्य बडे गहरे गढेसे (वन्दनाय उत् ऊपथुः) वन्दनको ऊपर उठाया। '

वन्दन गहरे गढेमें पडा था, आंखें टूट गयीं थीं, अपघातसे निर्बल हुआ था, इसको गढेसे ऊपर उठाया, बाहर निकाला, बलवान् बना दिया और उसकी दृष्टि भी ठीक कर दी।

इस मंत्रमें ' अप गूळहं निधिं इव ' ये पद हैं। खजानेको गुप्त स्थानमें भूमिमें गाडकर रखते थे। यह बात रेभके वर्णनमें भी आ चुकी है। इनकी यहां तुलना करना योग्य है। दोनों ऋषि गढेमें गिरे थे। उनकी तुलना ' गढेमें रखे धनके समान ये ऋषि गढेमें थे ' ऐसी की है। अर्थात् अपने धनको भूमिमें गाडकर रखनेकी बात यहां स्पष्ट दीखती है। अब वंदनका वर्णन और देखिये—

सुपुष्वांसं न निर्ऋतेः उपस्थे
सूर्यं न दस्रा तमसि क्षियन्तम्।
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखातम्
उत् ऊपथुः अश्विना वन्दनाय ॥ ऋ. १।११७।५

'हे (दस्रा अश्विना) शत्रुनिवारक अश्विदेवो! (तमसि क्षियन्तं सूर्यं न) अन्धेरे छिपे सूर्यके समान (निर्ऋतेः उपस्थे सुषुप्वांसं) विनाशके समीप सोये हुएके समान विनाशको करीब करीब प्राप्त हुए (शुभे दर्शतं रुक्मं न) शोभाके योग्य दर्शनीय सुवर्णके समान (निखातं) गाडे हुए (वन्दनाय उत् ऊपथुः) वन्दनके हित करनेके लिये तुमने उसको ऊपर उठाया।'

इस मंत्रमें कहा है कि वन्दन गढेमें पडा था, विनाश होनेकी अवस्थातक (निर्ऋतेः उपस्थे) उसकी शोचनीय अवस्था बनी थी, (शुभे रुक्मं दर्शतं निखातं न) सुन्दर दर्शनीय आभूषण गढेमें रखनेके समान वन्दनको गढेमें डाल दिया था, अथवा वन्दन गढेमें गिर गया था, उसको तुमने ऊपर उठाया और ठीक किया।

इस मंत्रमें भी "सुन्दर आभूषण गढेमें रखते हैं।" (दर्शतं रुक्मं निखातं न) ऐसा कहा है। उदयके पूर्व सूर्य जैसा अन्धेरेमें रहता है (सूर्यं न तमसि क्षियन्तं) इस उपमामें यह वन्दन ऋषि सूर्यके समान तेजस्वी है, परंतु सूर्य सवेरे शामको अन्धेरेसे छिपा रहता है, वैसा यह वन्दन ऋषि अत्यन्त ज्ञानी है, परंतु गढेमें गिरनेसे विपत्तिमें पडा है। वह ज्ञानी होनेपर भी गढेमें गिरनेके कारण विनाश होनेकी अवस्थातक पहुंचा था। इस मरनेकी अवस्थातक पहुंचे हुए वन्दनको अश्विदेवोंने ऊपर उठाया और सुदृढ बनाया। और देखिये—

उत वन्दनं ऐरयतं दंसनाभिः ॥ ऋ. १।११८।६
प्र दीर्घेण वन्दनः तारि आयुषा ॥
ऋ. १।११९।६

'तुमने वन्दनको (दंसनाभिः) अपनी अनेक शक्तियोंसे बाहर निकालकर ठीक किया। तथा (दीर्घेण आयुषा प्र तारि) उसको दीर्घ आयु देकर उसका तारण किया।'

उसको दीर्घायु बनाया ऐसा यहां कहा है। इस वन्दनके शरीरपर बहुत प्रयोग करनेकी आवश्यकता थी ऐसा अनुमान 'दंसनाभिः' पदसे हो सकता है। इस पदसे तीन या अधिक उपाय किये गये थे ऐसा स्पष्ट दीखता है। वन्दनकी अवस्था कैसी थी इसका विचार करनेके लिये नीचे लिखे मंत्रका विचार करना योग्य है—

युवं वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया
रथं न दस्रा करणा सं इन्वथः।
क्षेत्राद् आ विप्रं जनथो विपन्यया
प्र वां अत्र विधते दंसना भुवत्॥
ऋ. १।११९।७

'हे (दस्रा करणा) दोष दूर करनेवाले कुशल अश्विदेवो! (जरण्यया निर्ऋतं वंदनं) बुढापेसे पूर्णतया कष्टदायी अवस्थाको पहुंचे वंदनको (रथं इव समिन्वथ) रथको जिस तरह दुरुस्त करते हैं उस तरह उसको नयासा-तरुणसा-बनाया और (विपन्यया) अपनी बुद्धिसे (विप्रं क्षेत्रात् आजनथः) उस ब्राह्मणको क्षेत्रके गढेसे ऊपर लाकर नया तरुण जैसा बनाया। इस तरह तुम्हारे प्रशंसनीय कार्य हुए हैं।'

युवं वंदनं ऋश्यदात् उदूपथुः ॥ ऋ. १०।३९।८

'तुमने वंदनको गहरे कूवेसे ऊपर उठाया।' इत्यादि मंत्र वन्दनको सुदृढ, दीर्घायु, तरुण बनाया, उसकी दृष्टि सुधारी और सुखदायी जीवनसे युक्त बनाया ऐसा भाव बता रहे हैं।

वन्दन ऋषि विद्वान् तथा तेजस्वी था। वह गहरे गढेमें गिर गया था, उसकी दृष्टि दूर होकर वह अन्धा बना था, कृश तथा शरीरसे निर्बल बना था, मरनेतक अवस्था उसकी पहुंची थी। ऐसी अवस्थामें उसको गढेसे ऊपर उठाया, उसकी दृष्टि ठीक की, उसका शरीर सबल किया और उसको दीर्घायु बनाया रथको दुरुस्त करनेके समान उसके हरएक अवयव ठीक करने पडे। अर्थात् अनेक उपाय करके उसको तरुण तथा दीर्घायु बनाया गया।

९ रेभकी सहायता

रेभकी सहायता अश्विदेवोंने की थी, इस विषयके मंत्र अब देखिये-

कुत्स आंगिरसः।

याभी रेभं निवृतं सितं अद्भ्यः
उत् वंदनं ऐरयतं स्वर्दृशे ॥ ऋ. १।११२।५

'(निवृतं सितं रेभं) डुबाये और बंधे रेभको तुमने (याभिः) जिन साधनों तथा उपायोंसे (स्वर्दृशे उदैरयतं) प्रकाशको देखनेके लिये ऊपर उठाया। इसी तरह वन्दनको

भी तुमने ऊपर उठाया। वन्दनका सब वर्णन इससे पूर्व आ चुका ही है।' रेभका वर्णन यहां देखना है-

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।

दश रात्रीः अशिवेना नव द्यून्
अवनद्धं अथितं अप्सु अन्तः।
विप्रुतं रेभं उदनि प्रवृक्तं
उन्निन्यथुः सोममिव स्रुवेण ॥ ऋ. १।११६।२४

'(अप्सु अन्तः) जलके अन्दर (दश रात्रीः) दस रात्री और (नव द्यून्) नौ दिनतक (अशिवेन अवनद्धं) अमंगलकारी शत्रुने बांधकर रखे हुए (उदनि विप्रुतं) जलमें भीगे (प्रवृक्तं रेभं) ऐसे व्यथित रेभको (उन्नि-न्यथुः) ऊपर लाया, जिस तरह स्रुवासे सोमको ऊपर लाते हैं।'

इस मंत्रमें कहा है कि अशुभकारी दुष्ट शत्रुओंने रेभको बांधकर नौ दिन और दस रात्रीतक जलमें डुबाकर रखा था। इस कारण उसको बडी पीडा हुई थी। अश्विदेवोंने उसको ऊपर निकाला और उसके सब कष्ट दूर किये। जलमें डूबे रहनेके कारण शरीरको शीतकी बाधा हुई थी, उस बाधाको दूर करके उसका शरीर ठीक किया। और देखिये—

कक्षीवान्।

अश्वं न गूळ्हं अश्विना दुरेवैः
ऋषिं नरा वृषणा रेभं अप्सु।
सं नं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिः
न वां पूर्व्या कृतानि ॥ १।११७।४

हे (वृषणा नरा अश्विना) बलवान् नेता अश्विदेवो! (दुरेवैः अप्सु गूळ्हं) दुष्टों द्वारा जलमें डुबाये (तं रेभं ऋषिं) उस रेभ ऋषिको (दंसोभिः) अपने अनेक भैषज्य कर्मोंसे (अश्वं न) घोडे जैसा बलवान् (संरिणीथाः) बना दिया। ये (वां पूर्व्या कृतानि न जूर्यन्ति) आपके पूर्व समयमें किये कर्म क्षीण नहीं होते अर्थात् इनका स्मरण हमें हैं। ये कर्म आपने किये थे यह प्रसिद्ध बात है।

रेभ ऋषि था ऐसा यहां कहा है! दुष्टोंने उस ऋषिको बांधकर जलमें फेंक दिया था। क्योंकि वह ऋषि रेभ उनके दुष्ट कृत्योंमें बाधा डालता था। इस रेभको अश्विदेवोंने जलसे ऊपर लाया और अनेक उपचारोंसे उसको घोडेके समान हृष्टपुष्ट और बलवान् बना दिया। और देखिये—

हिरण्यस्य इव कलशं निखातं
ऊद् ऊपथुः दशमे अश्विना अहन् ॥
ऋ. १।११७।१२

'सोनेका कलश जैसा जमीनमें गाडकर रखते हैं, उस तरह रेभ ऋषिको जलमें डुबा दिया था, हे अश्विदेवो! तुमने दसवें दिन उसको (उत् ऊपथुः) ऊपर निकाला।

यहां भी रेभ ऋषि दस दिन जलमें डुबाया गया था ऐसा कहा है। दस दिन जलमें पडा रहनेसे वह बडा निर्बल हो गया था। उसको औषधोपचारसे अश्विदेवोंने ठीक किया था।

इस मंत्रमें 'हिरण्यस्य कलशं निखातं' ये पद हैं। सोनेके आभूषणोंसे भरा कलश भूमिमें गाड देते हैं। अर्थात् सुरक्षित रखनेके लिये भूमिमें रखते हैं। यह कथन विचारणीय है। आभूषणोंको सुरक्षित रखनेके लिये ऐसा करते हैं। ऐसे कथन इससे पूर्व भी दो तीन वार आये हैं। रेभ जलमें डुबाया था, इसको समझानेके लिये यह उपमा है। सोनेके आभूषण कलशमें बंद करके जैसे जमीनमें गाड देते हैं, उस तरह रेभको जलमें बांधकर डुबाया था। और भी देखिये--

ऊत् रेभं दस्रा वृषणा शचीभिः।
ऋ. १।११८।६

'हे (दस्रा वृषणा) शत्रुके नाशकर्ता बलवान् अश्विदेवो, तुमने अपनी (शचीभिः रेभं उत् ऐरयतं) शक्तियोंसे रेभ ऋषिको ऊपर निकाला।' तथा-

युवं रेभं परिषूतेः ऊरुष्यथः। ऋ. १।११९।६

'आपने रेभको (परिषूतेः उरुष्यथः) संकटसे बचाया।' और देखिये-

काक्षीवती घोषा।

युवं ह रेभं वृषणा गुहाहितं।
उदैरयतं ममृवांसं अश्विना ॥ ऋ. १०।३९।९

'हे (वृषणा अश्विना) बलवान् अश्विदेवो! तुमने गुहामें पडे रेभ ऋषिको (ममृवांसं रेभं) मरनेकी अवस्थासे ऊपर लाकर बचा दिया।'

इससे स्पष्ट होता है कि रेभ ऋषि मरनेकी अवस्थातक पहुंचा हुआ था। अश्विदेवोंने ऐसी अवस्थासे उसको गढेसे बाहर निकाला और उसको हृष्टपुष्ट, स्फूर्तिला तथा घोडेके समान कार्यक्षम बना दिया। यह औषधि प्रयोगोंका सामर्थ्य है।

१० दधीची ऋषिको अश्वका सिरका भाग लगाना

दधीची ऋषि था। उसके पास मधुविद्या थी। उसको अश्विदेव सीखना चाहते थे। अश्विदेवोंने दधीची ऋषिके सिरपर शस्त्रक्रिया की और उस स्थानपर घोडेके सिरका भाग लगाया। उसके पश्चात् दधीचीने मधुविद्या अश्विदेवोंको सिखाई। यह कथा नीचे लिखे मंत्रोंमें दीखती है–

दध्यङ् ह यत् मधु आथर्वणो वां।
अश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीं उवाच ॥ ऋ. १।११६।१२
आथर्वणाय अश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम्। स वां मधु प्रवोचत् ऋतायन् त्वाष्ट्रं तत् दस्रौ अपि कक्ष्यं वा ॥ ऋ. १।११७।२२
युवं दधीचो मन आ विवासथः।
अथ शिरः प्रति वां अश्व्यं वदत् ॥ ऋ. १।११९।९

'(आथर्वणः दध्यङ्) अथर्वकुलमें उत्पन्न दधीची ऋषिने (अश्वस्य शीर्ष्णा ह) घोडेके सिरसे ही (वां) तुम दोनोंको (यत् ईं मधु प्र उवाच) मधुविद्याका उपदेश किया था।'

हे (दस्रौ) शत्रुका विनाश करनेवाले अश्विदेवो! (आथर्वणाय दधीचे) अथर्वकुलोत्पन्न दधीची ऋषिके लिये (अश्व्यं शिरः) घोडेका सिर (प्रति ऐरयतं) तुमने लगा दिया। (सः ऋतायन्) वह सत्यका प्रचार करता था, (वां मधु प्रवोचत्) तुम दोनोंको उसने मधुविद्याका उपदेश किया था। (यत् वां) वैसी ही तुम दोनोंकी (अपि कक्ष्यं त्वाष्ट्रं) अवयवोंको जोडनेकी विद्या जो त्वष्टासे प्राप्त थी वह भी यहां प्रसिद्ध हुई।

'(युवं दधीचः मनः) तुम दोनों दधीची ऋषिका मन (आ विवासथः) अपनी ओर आकर्षित कर चुके और (अश्व्यं शिरः वां प्रति अवदत्) घोडेके सिरने तुमको वह उपदेश दिया।

इन मंत्रोंमें दधीची ऋषिको घोडेका सिरका भाग लगाया, और उसने अश्विदेवोंको मधुविद्या सिखाई यह वृत्त है। यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या घोडेका सिरका भाग मनुष्यके सिरपर बिठलाया जा सकता है? आजके शस्त्रविद्याके तज्ज्ञ कहते हैं कि ऐसा नहीं होगा। पर यही बात उपनिषद्में भी कही है। बृहदारण्यक उपनिषद्में कहा है–

इदं वै तत् मधु दध्यङ्ङाथर्वणोऽश्विभ्यां उवाच। तदेतदृषिः पश्यन्नवोचत्। "तद्वां नरा सनये दंस उग्रं आविष्कृणोमि तन्यतुः न वृष्टिम्। दध्यङ् ह यत् मधु आथर्वणो वां अश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीं उवाच" इति ॥ १६ ॥

बृ. उ. २।५।१६

'यह मधुविद्या अथर्ववेदी दधीची ऋषिने अश्विदेवोंको कही। इस विद्याको जाननेवाले ऋषिने कहा है। 'अथर्ववेदी दधीची ऋषिने घोडेके मुखसे तुम दोनोंको मधुविद्याका उपदेश किया। (हे नरा) नेता अश्विदेवो! (तत् वां इदं उग्रं दंसः) वह यह आपका शस्त्रक्रियाका उग्र कर्म है, जो लोकहितकारी वृष्टिके समान लोकहितके लिये मैं प्रसिद्ध करता हूं।' यह मंत्र ऋ. १।११६।१२ वां है। और देखिये—

इदं वै तत् मधु दध्यङ्ङाथर्वणोऽश्विभ्यां उवाच। तदेतदृषिः पश्यन्नवोचत्।
"आथर्वणाय अश्विनौ दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम्। स वां मधु प्रवोचत् ऋतायन् त्वाष्ट्रं यद्दस्रावपि कक्ष्यं वां" इति ॥

बृ. उ. २।५।१७

'यह वह मधुविद्याका ज्ञान अथर्वकुलोत्पन्न दधीचीने अश्विदेवोंको कहा। वह यह ऋषि देखकर बोला। 'हे अश्विदेवो! तुमने दधीचीको घोडेका सिर बिठलाया। सत्यनिष्ठ उस ऋषिने उस मधुविद्याको तुम्हें उपदेश द्वारा कहा। हे (दस्रा) शत्रुनाशकर्ता अश्विदेवो! (त्वाष्ट्रं कक्ष्यं) त्वष्टृ संबंधी गूढ ज्ञान तुम्हें उसने कहा।' यहांका मंत्र वही है जो पूर्वस्थानमें दिया है। ऋ. १।११७।२२

इदं वै तत् मधु दध्यङ्ङाथर्वणो अश्विभ्यां उवाच। तदेतदृषिः पश्यन्नवोचत्। "पुरश्चक्रे द्विपदः पुरश्चक्रे चतुष्पदः। पुरः स पक्षी

भूत्वा पुरः पुरुष आविशादिति ।" स वा अयं पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयो नैनेन किंचन अनावृतं नैनेन किंचनासंवृतम् ॥ बृ. २।५।१८

इस ज्ञानको अथर्ववेदी दधीची ऋषिने अश्विदेवोंसे कहा था। वह ज्ञान जाननेवाले ऋषिने ऐसा कहा। 'उस ईश्वरने दो पांवके शरीर बनाये, उसीने चार पांवके शरीर बनाये। वह पुरुष पक्षी होकर, अर्थात् अन्तरिक्षगामी होकर, शरीरमें प्रविष्ट हुआ।' शरीरमें प्रवेश करनेवाला, शरीरमें शयन करनेवाला पुरुष ही यह आत्मा है। इसने कुछ व्यापा नहीं ऐसा यहां कुछ भी नहीं है, इसके द्वारा कुछ प्रविष्ट हुआ नहीं ऐसा भी कुछ नहीं। अर्थात् यह अन्दर और बाहर सबको घेरकर रहा है। 'पुरश्चके' यह मंत्र शतपथ १४।५।५।१८ में है।

इदं वै तन्मधु दध्यङ्ङाथर्वणोऽश्विभ्यामुवाच। तदेतदृषिः पश्यन्नवोचत्। "रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय। इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दशेति।" अयं वै हरयोऽयं वै दश च सहस्राणि बह्वानि चानन्तानि च तदेतद्ब्रह्मा पूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यमयमात्मा ब्रह्म सर्वानुभूरित्यनुशासनम् ॥ बृ. २।५।१९

'यह मधुविद्या अथर्ववेदी दधीची ऋषिने अश्विदेवोंसे कही। इसको जाननेवाले ऋषिने ऐसा कहा था। "वह आत्मा प्रत्येक रूपके लिये प्रतिरूप बना है। वह उसका रूप देखनेके लिये है। परमात्मा इन्द्र अपनी अनंत शक्तियोंसे अनंत रूप बना है। विश्वरूप बनकर वह कार्य कर रहा है। दस सौ अर्थात् अनेक किरण ये उसकी अनंत शक्तियां ही हैं।" दश सहस्र अनंत जो शक्तियां हैं वे सब मिलकर वह एक ब्रह्म ही है। यह सब ब्रह्म ही है। यह अपूर्व है, इससे भिन्न दूसरा ऐसा वहां कुछ भी नहीं है। जिसके अन्दर या बाहर दुसरा कुछ भी नहीं है। यह आत्मा ही ब्रह्म है। सबका अनुभव लेनेवाला यही है। यही उपदेश है।'

यह सब ब्रह्म है, यही ज्ञान मधुविद्या है। यह अथर्ववेदीय दधीची ऋषिके पास थी। दधीची ऋषि इस विद्याको जानता था। अश्विदेवोंने दधीची ऋषिका मस्तक घोडेका सिरका भाग लगाकर दुरुस्त किया। इसलिये यह विद्या दधीचीने अश्विदेवोंको सिखाई।

यहां अश्विदेवोंने शस्त्रक्रियाका बडा कुशलताका कर्म किया। मनुष्यके सिरपर घोडेके सिरका भाग जोडना और मनुष्यका सिर ठीक करना यह साधारण कार्य नहीं है। जो अश्विदेवोंने किया था।

११ इन्द्रको मेषके वृषण लगाये

इन्द्रने अहल्याके साथ अयोग्य व्यवहार किया, इससे गौतम ऋषिको क्रोध आया और—

इन्द्रस्यापि च धर्मज्ञ छिन्नं तु वृषणं पुरा। ऋषिणा गौतमेनोर्व्यां क्रुद्धेन विनिपातितम् ॥

लिंगपुराण १९।२७

'गौतम क्रुद्ध हुआ और उसने इन्द्रके वृषण काटकर भूमिपर गिराये।' (गौतमेन क्रुद्धेन इन्द्रस्य वृषणं छिन्नं, उर्व्यां विनिपातितं) स्वपत्नीके साथ बुरा व्यवहार करनेवालेके साथ उसका पति ऐसा ही करेगा। इन्द्रने देवोंकी प्रार्थना की—

अफलस्तु ततः शक्रो देवानग्निपुरोगमान्। अब्रवीत् त्रस्तनयनः सिद्धगंधर्वचारणान् ॥ १ ॥ तन्मां सुरवराः सर्वे सर्षिसंघाः सचारणाः। सुरकार्यकरं यूयं सफलं कर्तुमर्हथ ॥ ४ ॥

वा. रामायण बाल ४९

'अण्ड विहीन हुआ इन्द्र देवोंसे बोला, कि मैंने सुरकार्य किया है इसलिये मुझे आप सफल कीजिये।' अर्थात मेरे अण्ड गिर गये वे आप मुझे लगाईये। यह प्रार्थना सुनकर देवोंने मेषवृषण उसको लगाये—

अग्नेस्तु वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः। उत्पाट्य मेषवृषणौ सहस्राक्षे न्यवेशयन् ॥

वा. रामा. बा. ४९।८

'अग्निका भाषण सुनकर पितृदेवोंने मेषके वृषण उखाड कर इन्द्रको लगा दिये।' इससे इन्द्र पुनः पूर्ववत् पुरुष बना। अर्थात् यह कार्य उस समयके शस्त्रक्रिया करनेवालोंने ही किया होगा।

आज बंदरकी ग्रंथियां मनुष्यको लगाते हैं, पर मेढेके वृषण मनुष्यको लग सकते हैं या नहीं, इस विषयमें संदेह है। पर प्राचीन समयमें यह कार्य होता था।

इस विषयमें वेदमन्त्रोंमें या अश्विनौके मंत्रोंमें कुछ भी वर्णन नहीं है। यह रामायणमें है परन्तु यहां यह देखने योग्य है इसलिये यहां दिया है। यदि यह इस तरह हुआ होगा, तो अश्विदेवोंके कार्यालयसे ही हुआ होगा, क्योंकि अश्विदेवोंने ऐसे बहुत ही कार्य किये ऐसे वर्णन बहुत ही हैं।

१२ पठर्वाके पेटका सुधार

याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मना।
अग्निर्नादीदेच्चित इद्धो अज्मन्ना ॥

ऋ. १।११२।१७

(इद्धः चितः अग्निः न) प्रदीप्त और प्रज्वलित अग्निके समान (पठर्वा) पठर्वा नरेश (याभिः अज्मन्) जिन शक्तियोंसे संगत होकर (जठरस्य मज्मना) पेटके बलसे (आ अदीदेत्) पूर्णतया प्रदीप्त हो उठा, प्रसिद्ध हुआ।

पेटकी शक्ति, पेटकी पाचन शक्ति, तथा पेटमें जो अन्य शक्तियां हैं उनके सुधार होनेसे शरीरकी शक्ति बढती है और मनुष्य महान् कर्म करनेमें समर्थ होता है और सुप्रसिद्ध होता है। उस तरह अश्विदेवोंके चिकित्सा कर्म करनेसे पठर्वाका सामर्थ्य बढ गया। उसका पेठ सुधरा और शरीरकी शक्ति बढ गई।

१३ नार्षदको श्रवण शक्ति दी

इस समयतक आंख, पेट, शरीर ठीक करनेके कार्य जो अश्विदेवोंने किये थे, उनका वर्णन किया। अब कानोंका सुधार करनेके विषयमें देखिये—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।
प्रवाच्यं तत् वृषणा कृतं वां।
यत् नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ॥ ऋ. १।११७।८

' जो आपने नार्षदको श्रवणशक्ति दी वह आपका कृत्य वर्णन करने योग्य हुआ। '

नार्षद बहिरा था। सुननेमें उसके कान असमर्थ थे। अश्विदेवोंने उसके कान ठीक किये और वह अपने कानोंसे सुननेमें समर्थ हुआ। यह कार्य वर्णन करने योग्य हुआ ऐसा भी ऊपरके मंत्रमें लिखा है। लोग इस कार्यकी प्रशंसा करने लगे इतना आश्चर्यकारक यह कार्य हुआ था।

१४ विमना और विश्वकका बुद्धिका सुधार

मनुष्यका मन तथा बुद्धि बिगड गयी, तो मनुष्य निकम्मा होता है, इसलिये उपचारोंसे मन, बुद्धिका सुधार वैद्य करते हैं। इस विषयमें देखिये—

कथा नूनं वां विमना उपस्तवत्
युवं धियं ददथुः वस्यइष्टये।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे।
मा नो वि यौष्टं सख्या सुमोचतम् ॥

ऋ. ८।८६।२

(विमना नूनं वां कथा उपस्तवत्) विमनाने आपकी किस तरह प्रशंसा की थी ? (वस्य-इष्टये) इष्ट धन प्राप्त करनेके लिये (युवं धियं ददथुः) आपने उसको बुद्धि दी। (विश्वकः तनूकृथे वां हवते) विश्वक अपने शरीरके सुधारके लिये आपकी प्रार्थना कर रहा है। (नः सख्या मा वि यौष्टं) हमारी मित्रताका विरोध न कर और हमें दुःखसे (सुमोचतं) मुक्त कर दो।

इस मंत्रमें ' विमना ' का नाम आया है। ' विमना ' वह है जिसका मन बिगडा है, जिसका मन ठीक कार्य नहीं कर रहा। इसको अश्विदेवोंने (धियं ददथुः) बुद्धि प्रदान की, मनका सुधार किया जिससे (वस्य-इष्टये) इष्ट धनको प्राप्त करनेमें वह समर्थ हुआ। उपचारोंसे मनका सुधार करने और बुद्धिकी कार्यक्षमता बढानेका यहां उल्लेख है।

इसी मंत्रमें कहा है कि ' विश्वकः तनूकृथे हवते।' विश्वक शरीरके सुधारके लिये तुम्हारी प्रार्थना कर रहा है। इसका शरीर रोगी, कृश और असमर्थ था। उसके शरीरका सुधार अश्विदेवोंके औषध उपचारोंसे हुआ और विश्वक सामर्थ्यसंपन्न हुआ। ' विश्व-क ' का अर्थ सब कार्य करनेमें जो समर्थ है यह है। विविध कार्य करनेकी क्षमता शरीरमें आ जाय, इसलिये विश्वकके शरीरपर उपचार किये गये और उसमें ये यशस्वी हुए। ऐसा कार्यक्षम शरीर उसको प्राप्त हुआ।

अश्विदेवोंने किनका संरक्षण किया ?

१५ दिवोदास

अश्विदेवोंने अनेकोंका रक्षण किया था। प्रायः इस रक्षणके लिये ' अव् ' धातुका प्रयोग वेदमें होता है। इस धातुके अर्थ अनेक हैं जिनका विचार हम अन्तमें करेंगे।

प्रथम हम जिनका रक्षण किया उनका वर्णन करनेवाले मंत्र यहां देखेंगे—

यासिष्टं वर्तिः वृषणा विजेन्यं
दिवोदासाय महि चेति वां अवः ॥

ऋ. १।११९।४

(विजेन्यं वर्तिः आयासिष्टं) सुदूरवर्ति उसके घर आप गये (वां अवः) और आपका संरक्षणका कार्य (दिवोदासाय महि चेति) दिवोदासके लिये बडा ही महत्वपूर्ण हो चुका।

अश्विदेव दिवोदासके दूरस्थित घरपर गये, उन्होंने उसके सुधारके लिये उपचार किया, उस उपचारने उसको बडा लाभ हुआ।

१६ पृश्निगु और पुरुकुत्स

याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्सं आवतं । ऋ. १।११२।७

' अनेक शक्तियोंद्वारा पृश्निगु और पुरुकुत्सकी रक्षा की। '

१७ दशव्रजादिका रक्षण

याभिः दशव्रजं आवतं । ऋ. ८।८।२०

याभिः कुत्सं आर्जुनेयं शतक्रतू
प्र तुर्वीतिं प्र च दभीतिं आवतं ।
याभिः ध्वसन्तिं पुरुषन्तिं आवतं ।

ऋ. १।११२।२३

याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसश्चतं
वसिष्ठं याभिः अजरौ अजिन्वतम् ।
याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यं आवतम् ।

ऋ. १।९२।९

युवं ह कृशं युवं अश्विना शयुं
युवं विधन्तं विधवां उरुष्यथ ।
युवं सनिभ्यः स्तनयन्तं अश्विना
अप व्रजं ऊर्णुथाः सप्तास्यम् ॥ ऋ. १०।४०।८

आपने दशव्रज, कुत्स, आर्जुनेय, तुर्वीति, दभीति, ध्वसन्ति, पुरुषन्ति, सिन्धु, वसिष्ठ, श्रुतर्य, नर्य, कृश, शयु, विधन्त आदिकी रक्षा की और गौओंके वाडेको खोल दिया था। तथा—

याभिः अन्तकं जसमानं आरणे
याभिः कर्कन्धुं वयं च जिन्वथः ।

ऋ. १।११२।६

' जिन साधनोंसे अन्तक, कर्कन्धु और वय्यकी रक्षा की। '

१८ कक्षीवान्का रक्षण

उशिक् पुत्र कक्षीवानके रक्षणके विषयमें नीचे लिखे मंत्र देखने योग्य हैं—

याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे
दीर्घश्रवसे मधुकोशो अक्षरत् ।
कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिः आवतं ।

ऋ. १।११२।११

युवं नरा स्तुवते पज्रियाय
कक्षीवते अरदतं पुरंधिम् । ऋ. १।११६।७
तद् वां नरा शंस्यं पाज्रियेण
कक्षीवता नासत्या परिज्मन् ।
शफादश्वस्य वाजिनौ जनाय
शतं कुंभानसिंचतं मधूनाम् ॥ ऋ. १।११७।१६

' जिन शक्तियोंसे उशिक् पुत्र दीर्घश्रवाके लिये मधुका खजाना दिया और कक्षीवान्की रक्षा की। पज्रपुत्र कक्षीवान्को उत्तम बुद्धि दी। हे अश्विदेवो ! वह तुम्हारा अति प्रशंसनीय कार्य है जिसकी कक्षीवान्ने प्रशंसा की। आपने शहदके सौ घडे लोगोंके लिये भरकर दिये।

१९ ऋतस्तुभ

ओम्यावती सुभरां ऋतस्तुभं । ऋ. १।११२।२०

' ऋतस्तुभको सुरक्षित तथा भरपूर सामग्री देकर तुमने उसका रक्षण किया। '

२० औचथ्य

दस्रा ह यद् रेक्णः औचथ्यः वां
प्र यद् सस्राथे अकवाभिः ऊती ।

ऋ. १।१८०।१

उपस्तुतिः औचथ्यं उरुष्येन् मा
मां इमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।
मा मां एधो दशतयः चितो धाक्
प्र यद् वां बद्धः त्मनि खादति क्षाम् ॥

ऋ. १।१८०।४

' हे (दस्रा) अश्विदेवो ! (औचथ्यः) उचथ्यका पुत्र (रेक्णः) धनके लिये (वां) आपकी प्रार्थना करता है,

उसको तुम (अकवाभिः ऊती) निर्दोष रक्षणोंसे (प्र सन्नाथे) रक्षण करते हैं । '

(मां औचथ्यं उपस्तुतिः उरुष्येत्) मुझ औचथ्यको तुम्हारी स्तुति सुरक्षित रखे । (इमे पतन्निणी मां मा वि दुग्धां) ये सूर्यसे बने दिनरात मुझे निःसार न बना डालें । (शततयः चितः एधः) दस गुणा प्रदीप्त हुआ अग्नि (मां मा धाक्) मुझे मत जला देवे । (यत् वां बद्धः) जो आपका भक्त बांधकर फेंका गया था वही फेंकनेवाला (त्मनि क्षां खादति) वही स्वयं धूलीको खाता हुआ वहां पडा है ।

अर्थात् मुझ औचथ्यका उत्तम संरक्षण हो । और जो सज्जनोंको कष्ट देता है वह दुःख भोगे ।

याभिर्वध्रं विपिपानं उपस्तुतं
कलिं याभिः वित्तजानिं दुवस्यथः ।
याभिः व्यश्वं उत पृथिं आवतं ।

ऋ. १।११२।१५

' वध्र, उपस्तुत, कलि, व्यश्व और पृथिकी रक्षा तुमने की थी । '

यथा चित् कण्वं आवतं
प्रियमेधं उपस्तुतं
अत्रिं सिंजारं अश्विना ॥ ऋ. ८।५।२५

' हे अश्विदेवो ! तुमने कण्व, प्रियमेध, उपस्तुत, अत्रि, सिंजारका संरक्षण किया था । '

२१ सप्तवध्रि

सप्तवध्रिं च मुञ्चतम् । ऋ. ५।७८।५
भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये ।
मायाभिः अश्विना युवं वृक्षं सं च विवाचथः ॥

ऋ. ५।७८।६

प्र सप्तवध्रिः आशसा धारां अग्नेः अशायत ।
अन्ति षद् भुतु वां अवः ॥ ऋ. ८।७३।९
युवं० चक्रथुः सप्तवध्रये । ऋ. १०।३९।९

सप्तवध्रिकी तुमने मुक्तता की । सप्तवध्रि ऋषि भयभीत हुआ था, प्रार्थना कर रहा था । तुमने अनेक युक्तियोंसे वृक्ष-से बने रथको तोड-जोडकर ठीक करते हैं उस रीतिसे ठीक किया था । सप्तवध्री अग्निकी धारामें पडा था, उसको तुमने बचाया था । वह आपका संरक्षण हमें प्राप्त हो। तुमने सप्तवध्रीको सहायता करके ऐसा ही उसको संरक्षण दिया था ।

यथोत कृत्व्ये धने अंशुं गोष्वगस्त्यम् ।
यथा वाजेषु सोभरिम् ॥ ऋ. ८।५।२६

' तुमने युद्धोंमें अंशु, अगस्त्य और सोभरीका रक्षण किया था । '

यातं वर्तिः तनयाय त्मने च
आगस्त्ये नासत्या मदन्ता । ऋ. १।१८४।५

' आप आनन्दसे अगस्त्यके घर गये और उसका तथा उसके बालबच्चोंका रक्षण किया । '

याभिः पक्थं अवथो याभिः अध्रिगुं
याभिः वध्रुं विजोषसम् ।
ताभिः नो मक्षू तूयं अश्विना गतं
भिषज्यतं तदातुरम् । ऋ. ८।२२।१०

' जिन साधनोंके साथ तुम पक्थ, अध्रिगु, वध्रुकी रक्षा करनेके लिये जाते हैं, उन साधनोंके साथ हे अश्विदेवो ! हमारे पास आओ और रोगीकी चिकित्सा करो । '

यत् अद्य अश्विनौ अपाक्
यत् प्राक् स्थो वाजिनीवसू ।
यद् द्रुह्यवि अनवि तुर्वशे यदौ
हुवे वां अथ माऽऽगतम् ॥ ऋ. ८।१०।५

' हे अश्विदेवो ! तुम जो पश्चिममें पूर्वमें तथा द्रुह्यु, अनु, तुर्वश, यदुके पास जाते हैं, वैसे ही मेरे पास भी आओ । '

युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या ।
अवोभिः याथः वृषणा वृषण्वसू ॥

ऋ. ८।२६।२

हे (वरो नासत्या वृषणा वृषण्वसू) श्रेष्ठ, सत्य प्रेरक, बलवान् और धनवान् अश्विदेवो ! आप सुषामनके लिये (महे तने) बहुत धन मिले इसलिये (अवोभिः याथः) संरक्षणोंके साथ जाते हैं ।

याभिः शारीः आजतं स्यूमरश्मये ।

ऋ. १।११२।१६

' स्यूमरश्मीके संरक्षणके लिये जिन शक्तियोंसे बाणोंको तुमने शत्रुपर फेंका था । '

याभिः शर्यातं अवथः महाधने ।

ऋ. १।११२।१७

'जिन शक्तियोंसे तुमने शर्यातका रक्षण युद्धमें किया था।'

याभिः व्यश्वं० आवतं । ऋ. १।११२।१५

'जिन शक्तियोंसे व्यश्वकी तुमने रक्षा की।'

२२ शंयु

त्रिः नो अश्विना दिव्यानि भेषजा
त्रिः पार्थिवानि त्रिः उ दत्तं अद्भ्यः ।
ओमानं शयोः ममकाय सूनवे
त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती ॥ ऋ. १।३४।६

हे (शुभः पती अश्विना) शुभ कर्म करनेवाले अश्विदेवो! (नः दिव्यानि भेषजा त्रिः) हमें द्युलोककी तीन औषधें, (पार्थिवानि त्रिः) पृथिवीपरकी तीन और (अद्भ्यः त्रिः दत्तं) जलोंके तीन दे दो। (ममकाय सूनवे शयोः) मेरे पुत्रको सुख प्राप्त हो इसलिये (ओमानं त्रिधातु शर्म वहतं) संरक्षक और तीन धातुओंसे सुस्थिति देनेवाला सुख हमें दे दो।

२३ वत्स ऋषि

वत्स ऋषिकी सहायता अश्विदेवोंने की थी। इस विषयमें नीचे लिखे मंत्र देखने योग्य हैं—

यो वां नासत्यौ ऋषिः गीर्भिः वत्सो अवीवृधत्।
तस्मै सहस्रनिर्णिजं इषं धत्तं घृतश्चुतम् ॥ १५ ॥

ऋ. ८।८।१५

आ नूनं अश्विना युवं वत्सस्य गन्तं अवसे ।
प्रास्मै यच्छतं अवृतं पृथु छर्दिः युयुतं या अरातयः ॥ १ ॥

यन्नासत्या भुरण्यथः यद्वा देव भिषज्यथः ।
अयं वां वत्सो मतिभिः न विन्दते हविष्मन्तं हि गच्छथः ॥ ६ ॥

यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिः वत्साय यच्छतम् ॥ १५ ॥ ऋ. ८।९।१;६;१५

हे (नासत्यौ) सत्यनिष्ठ अश्विदेवो। (यः वत्सः ऋषिः) जो वत्स ऋषि (वां गीर्भिः अवीवृधत्) आपकी स्तुति अपनी वाणीसे करता रहा था, (तस्मै) उस वत्स ऋषिको (घृतश्चुतं) घी टपकानेवाला (सहस्र-निर्णिजं) सहस्र प्रकारका (इषं धत्तं) अन्न या इष्ट धन दे दो ॥ १५ ॥

हे अश्विदेवो! (युवं नूनं) तुम निश्चयसे (वत्सस्य अवसे आगतं) वत्सकी रक्षाके लिये आओ, (अस्मै) इसे (पृथु अ-वृकं छर्दिः) विस्तीर्ण भेडिये जैसे क्रोधी शत्रुओंसे रहित घर (प्रयच्छतं) दे दो। तथा (याः अरातयः) जो दुष्ट शत्रु है उनको (युयुतं) दूर करो ॥ १ ॥

हे (देवा नासत्या) देवो सत्यपालको! (यत् भुरण्यथः) जो तुम भरणपोषणका कार्य करते हो, (यत् वा भिषज्यथः) अथवा जो चिकित्सा करते हो (अयं वत्सः) यह वत्स ऋषि (वां मतिभिः न विन्दते) आपको अपनी बुद्धियोंसे जान नहीं सकता, इतना आपका कार्य महान् है आप (हविष्मन्तं हि गच्छथः) यज्ञकर्ताके पास जाते हैं ॥ ६ ॥

हे (नासत्या) अश्विदेवो! (प्रचेतसा) हे बडे चित्तवालो! (यत् पराके) जो दूर देशमें (अर्वाके) जो समीप (भेषजं अस्ति) औषध है, (तेन) उससे (विमदाय वत्साय) मदसे रहित वत्सके लिये (नूनं छर्दिः यच्छतं) निश्चयसे अच्छा घर दो ॥ १५ ॥

वत्सकी सहायता किस तरह की थी यह बात इन मंत्रोंमें स्पष्ट होती है। उसका घर रोग रहित किया, उसको औषध दिये, दूरसे या समीपसे वे लाये और उसका पोषण भी किया।

२४ मनुकी सहायता

याभिः पुरा मनवे गातुं ईषथुः ॥ १६ ॥
याभिः मनुं शूरं इषा सभावतं ॥ १८ ॥

ऋ. १।११२

यद् वा यज्ञं मनवे सं मिमिक्षथुः ॥ ऋ. ८।१०।२
दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं दिवि यवं वृकेण कर्षथः ॥ ऋ. ८।२२।६

'जिन शक्तियोंसे तुमने मनुको अच्छा मार्ग बताया था।' 'जिन शक्तियोंसे शूर मनुको अन्न देकर तुमने योग्य रीतिसे रक्षण किया।' 'मनुके लिये यज्ञको सम्यक् रीतिसे सिद्ध किया।' 'पहिले मनुको द्युलोकमें धन दिया और हलसे जौकी भूमिका कर्षण किया।'

इसमें मनुको योग्य मार्ग बताया, योग्य अन्न दिया, जिससे वह शूर हुआ आदि वर्णन है।

२५ मान्धाता

मान्धातारं क्षैत्रपत्येषु आवतं। ऋ. १।११२।१३

'क्षेत्रपतिके कर्तव्योंमें मान्धाताकी रक्षा की।' जिससे वह उत्तम क्षेत्र पति हुआ।

२६ पौरकी सहायता

पौरं चिद् ह्युदप्रुतं पौरं पौराय जिन्वथः।
यदीं गृभीततातये सिंहं इव द्रुहस्पदे॥

हे पौर! ऐसी हांक (पौराय) नगर निवासी जनके लिये (उदप्रुतं पौरं चित् हि) जलमें डूबनेवाले नागरिक जनकी सहायतार्थ (जिन्वथः) तुमने मारी थी, (यत् गृभीतता-तये) जब शत्रु द्वारा घेरे हुएको छुडवानेके लिये (ईं) इसको (द्रुहः पदे सिंहं इव) वनमें सिंहके समान तुमने वीरतासे सहायता दी।

२७ भरद्वाजकी सहायता

याभिः विप्रं प्र भरद्वाजं आवतं। ऋ. १।११२।१३

सं वां शता नासत्या सहस्रा
ऽश्वानां पुरुपन्था गिरे दात्।
भरद्वाजाय वीर नू गिरे दात्
हता रक्षांसि पुरुदंससा स्युः॥ ऋ. ६।६३।१०

हे अश्विदेवो! (वां गिरे) आपके कहनेसे (पुरुपन्था) पुरुपन्था नरेशने (अश्वानां शता सहस्रा) सैकडों या हजारों घोडे मुझे (संदात्) दिये। हे (पुरुदंससा) अनेक कार्य करनेवाले अश्विदेवो! (गिरे भरद्वाजाय दात्) स्तुति करनेवाले भरद्वाजको यह दान दिया है। अब (रक्षांसि हताः स्युः) राक्षस मारे ही जायंगे।

भरद्वाजको यह सहायता प्राप्त हुई थी।

२८ पृथुश्रवाकी सहायता

निहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता
पृथुश्रवसो वृषणौ अरातोः॥ ऋ. १।११६।२१

'पृथुश्रवाके शत्रुओंको तुमने (निहतं) मारा।'

२९ त्रसदस्युकी सुरक्षा

याभिः पूर्भिद्ये त्रसदस्युं आवतम्।
ऋ. १।११२।१४

याभिः नरा त्रसदस्युं आवतम्।
कृत्व्ये धने॥ ऋ. ८।८।२१

'युद्धमें त्रसदस्युकी अनेक शक्तियोंसे रक्षा की।'

३० शयुकी सहायता

याभिः नरा शयवे। ऋ. १।११२।१६
शयवे चित्रासत्या शचीभिः
जसुरये स्तर्यं पिप्यथुः गाम्॥ ऋ. १।११६।२१
शयुत्रा। ऋ. १।११७।१२
अपिन्वतं शयवे अश्विना गाम्।
ऋ. १।११७।२०
युवं धेनुं शयवे नाधिताय
अपिन्वतं अश्विना पूर्व्याय॥ ऋ. १।११८।८
युवं शयोः अवसं पिप्यथुः गवि।
ऋ. १।११९।६
दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुः गाम्। ऋ. ६।६२।७
पिन्वतं शयवे धेनुमश्विना। ऋ. १०।३९।१३
युवं अश्विना शयुं। १०।४०।८

शयु अत्यंत कृश था। उसके पास वंध्या गौ थी। उसको गर्भधारण समर्थ बनाया और दुधारू भी बनाया। इसका दूध पीकर शयु हृष्टपुष्ट हो गया।

वंध्या गौको प्रसूत होने योग्य बनाकर दुधारू बनाना यह औषधि प्रयोगसे हो सकता है।

३१ वध्रिमतीको पुत्र देना

वध्रिमत्या हिरण्यहस्तं अश्विनौ अदत्तम्।
ऋ. १।११६।१३

हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा
वध्रिमत्या अदत्तम्। ऋ. १।११७।२४
श्रुतं हवं वृषणा वध्रिमत्याः॥ ऋ. ६।६२।७
युवं हवं वध्रिमत्या अगच्छतं
युवं सुपूर्तिं चक्रथुः पुरंधये॥ ऋ. १०।३९।७

वध्रिमतीको पुत्र होने योग्य बनाया। उसको पुत्र होता नहीं था। उससे गर्भाशयमें पुत्रका गर्भ रहे ऐसा सुधार

किया जिससे वह गर्भवती हुई और उसको पुत्र हुआ।

स्त्रीको पुत्रियां होती हैं, उसको औषधोपचारसे पुत्र हो ऐसा करना वैद्यका कार्य है। यह कार्य अश्विदेवोंने किया ऐसा यहां बताया है।

३२ विमदको पत्नी देना

याभिः पत्नी विमदाय न्यूहथुः। ऋ. १।११२।१९
यौ अर्भगाय विमदाय जायां
सेनाजुवा न्यूहतू रथेन॥ ऋ. १।११६।१
युवं शचीभिः विमदाय जायां न्यूहथुः।
ऋ. १।११७।२०

विमद निर्बल था। उसको औषधोपचारसे स्त्रीके लिये योग्य बनाया और उसको पत्नी भी दी। पत्नी देनेका अर्थ पत्नीके साथ संबंध करने योग्य पौरुष सामर्थ्यसे युक्त उसको बनाया यह है।

यहां 'अव्' धातुका प्रयोग प्रायः किया है। 'अव्'= रक्षण-गति-कान्ति-प्रीति-तृप्ति-अवगम-प्रवेश - श्रवण-स्वाम्यर्थ-याचनक्रिया-इच्छा-दीप्ति- अवाप्ति - आलिंगन-हिंसा- दान-भाग-वृद्धिषु' अवके इतने अर्थ है। 'अवन' में ये अर्थ हैं। इनमें कौनसा अर्थ कहां लेना चाहिये यह खोजका विषय है। तात्पर्य यह है कि वैद्यकीय उपचार नाना प्रकारके होते हैं। उन उपायोंसे ये कार्य अश्विदेवोंने किये थे। इनसे उनके कार्योंका राष्ट्रव्यापित्व सिद्ध हो सकता है।

इस लेखमें (१) अन्धोंको दृष्टि दी, (२) लूलेको ठीक किया, (३) वृद्धको तरुण बनाया, (४) मरियलको दीर्घायु किया, (५) निर्बलको सबल बनाकर पत्नीके साथ उसका संबंध विवाह करके किया, (६) पानीमें डुबायेका सुधार किया, (७) अश्वका सिरका भाग सिरपर लगाया, (८) मेषके वृषण लगाकर फिरसे पुरुष बनाया, (९) पेटका सुधार किया, (१०) कानका सुधार करके श्रवणशक्ति दी, (११) मन और बुद्धिका सुधार किया, (१२) अनेकोंका संरक्षण किया, (१३) वंध्या गौको दुधारू बनाया, (१४) स्त्रीको पुत्र हो ऐसा सुधार किया।

इस तरहके कार्य किये। इससे सिद्ध होता है कि अश्विदेवराष्ट्रके आरोग्यमंत्री थे। राष्ट्रभरमें आरोग्य रक्षण करनेका कार्य उनका था। वे घर घर जाते थे, उपचार, शस्त्र कर्म तथा अन्य कर्म करते थे। जनताका आरोग्य रक्षण वे करते थे जिनके कार्यसे जनता नीरोग, दीर्घायु तथा हृष्टपुष्ट रहती थी। राष्ट्रमें कोई रोगी न रहे ऐसी यह व्यवस्था है। यद्यपि 'अश्विनौ' दो ही थे तथापि उनके कार्यालयमें अनेक उपचारक होंगे क्योंकि राष्ट्रभरमें जाकर स्थान-स्थानपर उपचार करना यह केवल दो ही कर नहीं सकेंगे। कार्यालयके प्रबंधसे ये कार्य होते थे इसलिये ये सब 'अश्विनौ' ने किये ऐसा ही बोला जाता है और वह योग्य ही है।

इस लेखमें अश्विदेवोंने जिनकी चिकित्सा की उनका परिचय अब कराते हैं, इससे उनकी योग्यता विदित होगी और चिकित्साका स्वरूप भी विदित होगा—

१ कविको दृष्टि दी

ऋग्वेदमें 'कविर्भार्गवः' यह ऋषि नवम काण्डके ४७; ४८; ४९ इन तीन सूक्तोंका और ७५-७९ इन पांच सूक्तोंका अर्थात् कुल ४० मंत्रोंका है। इसको ही दृष्टि दी ऐसा हमारा कहना नहीं है। कक्षीवान् ऋषिने वर्णन किया है उसमें—

कविं कृपमाणं अकृणुत विचक्षे।
ऋ. १।११६।१४

'तुम्हारी कृपाकी इच्छा करनेवाले कविको तुमने विशेष देखनेके लिये दृष्टि दी' ऐसा कहा है। 'विचक्षे' विशेष देखनेके लिये अश्विदेवोंने चिकित्सा की। थोडी दृष्टि तो थी, उसका विशेषीकरण किया। दृष्टिका विशेष सुधार किया यह भाव यहां है।

२ ऋज्राश्वको दृष्टि

'ऋज्राश्वो वार्षागिरः' यह ऋषि प्रथम मण्डलके सौवें सूक्तका है। इसमें १९ मंत्र हैं। यह ऋषिपुत्र बकरियां चराता था। भेडियेने सौ बकरियां खायीं तो भी यह चुप रहा इसलिये इसका पिता क्रोधित हुआ और उसने इसकी आंखें फोड दी। 'अशिवेन पित्रा' ऐसे शब्द मंत्र ऋ. १।११७।१७ में प्रयुक्त किये हैं। ऋज्राश्वके पिताने अपने पुत्रके आंख फोडनेका कार्य किया यह अयोग्य है। यह पिता अशुभ कर्म करनेवाला करके कहा है। १०० बकरे

भेडियेने खाये तो भी पिताको शान्त रहना चाहिये था यह भाव यहां दीखता है।

पिताने आंख तोड दिये, अर्थात् नेत्रके स्थान पर आंख नहीं रहे।

तस्मा अक्षी आ धत्तं। ऋ. १।११६।१६
अक्षी ऋज्राश्वे अश्विनौ आधत्तं।
ऋ. १।११७।१७

अश्विदेवोंने ऋज्रावमें आंखें स्थापन की। यहां बाहरसे आंखें लाकर स्थापन की यह भाव है। 'आ+धा' धातुका यह भाव है। ये बनावटी आंखें होंगी अथवा किसी अन्य प्रकारसे प्राप्त आंखें होंगी। आजकल मरे हुए मनुष्यकी आंखें निकालकर दूसरेके आंखमें लगाते हैं, इसका नाम 'आधान' है। यह अश्विदेवोंने किया था ऐसा प्रतीत होता है।

३ अंधे-लूलेको ठीक किया

'परावृज' अन्धा था (अन्धं श्रोणं चक्षसे एतवे कृथः। ऋ. १।११२।८) अंधेको देखने योग्य किया और लूलेको चलने-फिरने योग्य बनाया। यहां लूलेको चलने-फिरने योग्य बनाया यह विशेष विचारने योग्य है। लूलेके पांव वगैरा ठीक करनेके लिये बडे आपरेशन भी करने पडते हैं। यह सब अश्विदेवोंने किया था।

४ कण्वको दृष्टि

कण्व प्रसिद्ध पुरुष है। उसको (हर्म्ये) राजमहलमें रखकर (चक्षुः प्रत्यधत्तं) नेत्रोंका आधान किया। यहां 'हर्म्य' पद राजमहलका जैसा वाचक है। अश्विदेवोंका रुग्णालय राजमहल जैसा होगा। अथवा कण्वका आश्रम वैसा होगा। कण्व राजमहल जैसे स्थानमें था जिसको अश्विदेवोंने दृष्टि दी।

ऋग्वेदमें 'कण्वो घौरः' ऋषि प्रथम मण्डल १।३६-४३ और नवम मण्डल ९४ वें सूक्तका है। ऋग्वेदमें कण्व ऋषिके १०१ मंत्र हैं।

५ श्रवणशक्तिका प्रदान

नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तं। ऋ. १।११७।८

नार्षदको श्रवणशक्ति दी। इसके कान बिगड गये थे, सुनाई नहीं देता था। इसके कान ठीक करके सुनने योग्य बनाये।

६ कलिको तरुण बनाया

पुनः कलेः युवद्वयः अकृणुतं। ऋ. ८।१०१।८

कलि वृद्ध था (जरणां उपेयुषः) जरासे ग्रस्त था। उसको तरुण बनाया। (कलिं वित्तजानिं) कलिने स्त्री भी की थी।

च्यवनके समान ही कलिका तरुण बनना है। 'कलिः प्रागाथः' ऋ. ८।६६ के १५ मंत्रोंका ऋषि है।

७ सोमकको दीर्घायु

कुमारः साहदेव्यः दीर्घायुः अस्तु सोमकः ॥ ९ ॥
कुमारं साहदेव्यं दीर्घायुषं कृणोतन ॥ १० ॥
ऋ. ४।१५

सहदेवका कुमार सोमक नामका था। वह कृश, दुर्बल और रोगी था। उसको चिकित्सा करके दीर्घ आयुवाला बनाया।

८ श्यावको दीर्घायु करके पत्नी दी

त्रिधा विकस्तं श्यावं जीवसे ऐरयतं।
ऋ. १।११७।२४

यह श्याव तीन स्थानोंपर जखमी था उसको ठीक करके उत्तम पत्नीके साथ विवाह करके आनंदसे रहने योग्य बनाया। यह शस्त्रकर्म तथा चिकित्साका कार्य था।

९ वंदनको दीर्घायु

वंदन गढेमें पडा था, वृद्ध था, शरीर टूट गया था। उसका शरीर ठीक किया और उसको दीर्घायु दी। यहां वृद्ध कूवेमें पडनेके कारण (निर्ऋतेः उपस्थे सुपुष्वांसं। ऋ. १।११७।५) विनाशके समीप पहुंचेको अच्छा करके दीर्घायु बनाया।

१० रेभकी सहायता

रेभ भी दस दिनतक कूवेमें गिरा था। किसी (अशिवेन) दुष्टने इसको कूवेमें (दश रात्रीः नव द्यून) दस रात्री और नौ दिन फेंका था। उसको वहांसे ऊपर लाकर अच्छा बलवान् बना दिया।

यह रेभ ऋषि था ऐसा ऋ. १।११७।४ में कहा है। (ऋषिं रेभं अप्सु गूळहं) रेभ ऋषि जलोंमें डूबा था।

'रेभः काश्यपः' अर्थात् कश्यपपुत्र रेभ है। यह ऋषि ऋ. ८।९७ के सूक्तका ऋषि है। ऋग्वेदमें इस सूक्तके १५ मंत्र हैं।

११ दधीची ऋषिको अश्वशिर

दधीची ऋषिके अश्वका सिर लगाया । ऋ. १।११६।१२ इस मंत्रमें यह है । दधीची ऋषिके सिरपर अश्विदेवोंने शस्त्र क्रिया की और वहां घोडेके सिरका भाग लगाया । वेदमें अंशके लिये संपूर्णका उल्लेख आता है । उस तरह घोडेके सिरका भाग उनके सिरपर लगाया ऐसा मालूम होता है । इससे दधीची ऋषि उपदेश करनेमें समर्थ हुए ।

आज कोई शस्त्रक्रिया करनेवाला ऐसा कर नहीं सकता । या तो इस कथाका कोई आलंकारिक अर्थ होगा अथवा इसमें कुछ गुप्त बात होगी । जो मंत्रोंके पदोंसे व्यक्त होता है वह कार्य आजके प्रसिद्ध वैद्य कर नहीं सकते । इस कारण इसका संशोधन विशेष होना चाहिये ।

१२ इन्द्रको मेषवृषण लगाये

यह वृत्त वाल्मीकि रामायणमें है । वेदमें नहीं है ।

१३ पठर्वाके पेटका सुधार

पठर्वाके पेटका सुधार करनेका वर्णन ऋ. १।११२।१७ में है । (पठर्वां जठरस्य) पठर्वाके पेटका अग्नि प्रदीप्त किया, यह बात औषधोपचारकी है ।

१४ नार्षदके कानोंका सुधार

' नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तं ' (ऋ. १।११७।८) वह कानसे सुनता नहीं था, उसके कानोंका सुधार करके उसकी श्रवणशक्ति ठीक की ।

१५ विमना और विश्वका बुद्धिका सुधार

(विमना उपस्तवन्, धियं ददथुः । ऋ. ८।८६।२) विमनाने स्तुति की और उसको बुद्धि दी । (विश्वको तनुकृथे हवते) विश्वकके शरीरके सुधारके लिये प्रार्थना की, उसके शरीरका सुधार किया गया ।

इसमें बुद्धिका और शरीरका संवर्धन करनेका उल्लेख है । ' वि-मना ' का अर्थ ही जिसका मन बिगडा ऐसा है । इसके मनका सुधार किया गया ।

१६ दिवोदासका रक्षण

दिवोदासाय अवः । ऋ. १।११९।४

दिवोदासका संरक्षण किया ।

१७ पृश्निगु और पुरुकुत्सका रक्षण

पृश्निगुं पुरुकुत्सं आवतं । ऋ. १।११२।७

इनका रक्षण किया । किससे रक्षण किया यह यहां नहीं है ।

दशव्रज (ऋ. ८।८।२०), कुत्सं आर्जुनेयं (ऋ. १।११२।२३) तुर्वीति, दभीति, ध्वसन्ती, पुरुषन्ति, सिन्धु, वसिष्ठ, श्रुतर्य, नर्य, कृश, शयु, विधन्तकी रक्षा की । इनमेंसे कई ऋषि हैं—

१ वसिष्ठ ऋग्वेदके सप्तम मंडलका द्रष्टा है,

२ कुत्स आंगिरस ऋ. १।९४-९८; १।१०१-११५ तथा ९।९७ के द्रष्टा है,

३ कृशः काण्वः ऋ. ८।५५

ये ऋषि ऋग्वेदमें हैं । और वसिष्ठ तो मुख्य श्रेष्ठ ऋषि हैं । इनकी भी रक्षा अश्विदेवोंने की थी ।

१८ कक्षीवान्‌का रक्षण

कक्षीवन्तं आवतं । ऋ. १।११२।११

कक्षीवान्‌का रक्षण ।

कक्षीवान् दीर्घतमाका पुत्र ऋ. १।११६-१२६ तथा ९।७४ का ऋषि है । ये १६० मंत्र इनके देखे हैं ।

१९ ऋतस्तुभ और औचथ्य

दीर्घतमा औचथ्य ऋ. १।१४०-१६४ इन २४२ मंत्रोंका द्रष्टा है । इसकी सुरक्षा अश्विदेवोंने की ।

२० सप्तवध्रिकी मुक्तता

भीताय सप्तवध्रये । ऋ. ५।७८।६

भयभीत हुए सप्तवध्रीकी भयसे मुक्तता की और रथको ठीक करनेके समान (सं च वि वाचथः) तोड-जोड करके ठीक किया ।

सप्तवध्रि ऋषि ऋ. ८।७३; और सप्तवध्रिः आत्रेय ऋषि ऋ. ५।७८ सूक्तका है ।

२१ अगस्त्य और सोभरी

(अगस्त्यं, अंशुं, सोभरिं) ऋ. ८।५।२६ इनका रक्षण किया तथा ऋ. ८।२२।१० में पक्थ, अध्रिगु, बभ्रुके रक्षणका उल्लेख है ।

अध्रिगुः श्यावाश्विः ऋषिः ऋ. ९।१०१ का है ।

बभ्रुः आत्रेयः ऋ. ५।३० का है ।

अगस्त्य ऋषि ऋ. १।१६५ से १९० मंत्रोंका हैं ।

सोभरिः काण्वः ऋ. ८।१९-२२; १०३ मिलकर ११२ मंत्रोंका द्रष्टा है।

इनका रक्षण अश्विदेवोंने किया।

२२ शंयुका औषधि प्रयोगसे रक्षण

'ओमानं शंयोः' शंयुका रक्षण दिव्य औषधियां और पृथिवीपरकी औषधियां लाकर किया।

शंयु ऋषि बार्हस्पत्य है। ऋ. ६।४४-४८ तक ९३ मंत्रोंका द्रष्टा है।

२३ वत्स ऋषि

वत्स आग्नेयः ऋ. १०।१८७; वत्सः काण्वः ऋ. ८।६ का है। (घृतश्चुतं सहस्रनिर्णिजं इषं धत्तं। ऋ. ८।८। १५) घी जिससे टपकता है, सहस्र प्रकारके बलवाला अन्न देकर इसका सुधार किया। (पृथु छर्दिः) बडा घर रहनेके लिये दिया।

२४ मनुकी सहायता

तीन मनु ऋषि वेदमें हैं। मनुः आप्सवः ऋ. ९। १०६; मनुः वैवस्वतः ऋ. ८।२७-३१; मनुः सांवरणः ऋ. ९।१०१ इनमेंसे कौनसा यह मनु है, इसका पता नहीं। इसकी सहायता अश्विदेवोंने की।

२५ मांधाता

'क्षैत्रप्रत्येषु मान्धातारं आवतं' ऋ. १।११२।१३

क्षेत्रके पालन करनेके कार्यमें मान्धाताकी सहायता की। मान्धाता यौवनाश्व ऋषि ऋ. १०।१३४ का द्रष्टा है।

२६ पौरकी सहायता

पौर ऋषि आत्रेय है और वह ऋ. ५।७३-७४ का द्रष्टा है।

२७ भरद्वाजकी सहायता

भरद्वाज ऋषि षष्ठ मंडलका द्रष्टा है। इसको (अश्वानां शता दात् ऋ. ६।६३।१०) सैकडों घोडे दिये और इससे (रक्षांसि हताः) राक्षस मारे गये और भरद्वाज ऋषिका आश्रम निर्भय हुआ।

अश्विनौ घोडे पालते थे, घोडोंको सुशिक्षित करते थे। इस कारण भरद्वाजको उन्होंने घोडे दिये और उनकी सहायता की।

२८ पृथुश्रवाकी सहायता

पृथुश्रवाकी सहायता करनेके लिये उनके शत्रुओंको दूर किया। 'पृथु-श्रवाः' का अर्थ 'विशेष-ज्ञानी' है।

२९ त्रसदस्युकी रक्षा

युद्धमें त्रसदस्युकी रक्षा की ऋ. ८।८।२१; त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः ऋषि ऋ. ४।४२; ५।२७; ९।११० इन सूक्तोंका द्रष्टा है।

३० शयुकी सहायता

शयु ऋषिकी गायको दुधारू बनाया। इस समयतक मानवोंकी चिकित्सा करनेका वृत्त आया है। यहां गौको दुधारू बनानेका उल्लेख है। बहुत करके यह औषध प्रयोगसे ही किया होगा। यद्यपि मंत्रमें इस विषयका पता नहीं लगता।

३१ वध्रिमतिको पुत्र

वध्रिमतिको संतान नहीं होती थी। इसको औषधोपचार करके पुत्र उत्पन्न हुआ। यह औषध प्रयोगका विशेष चमत्कार है। जो गर्भवती हो नहीं सकती थी, उसको गर्भधारण समर्थ बनाना और पुत्र उत्पन्न हो ऐसा करना यह आज भी करनेवाला कोई वैद्य नहीं है। यह कार्य अश्विदेवोंने किया था।

३२ विमदको विवाहयोग्य बनाना

विमद निर्बल था, उसको बलवान् बनाया और विवाहयोग्य बनाकर उसका विवाह कराया।

विमद ऐन्द्रः। ऋ. १०।२०-२६

विमदः प्राजापत्यः। ऋ. १०।२०-२६

यह इन मंत्रोंका द्रष्टा है। अश्विदेवोंने दृष्टि दी, नेत्र कृत्रिम रखे, या दूसरे नेत्र लगाये, वृद्धोंको तरुण बनाया, टूटे हुए शरीरोंको नया जैसा बनाया, कान दुरुस्त किये, निर्बलोंको बलवान् बनाया, शस्त्रक्रिया करके शरीरका सुधार किया ऐसे अनेक कार्य करके ऋषियोंकी तथा अन्य लोगोंकी सहायता की।

इनमें जिन ऋषियोंके मंत्र हैं उनके स्थान दिये हैं। हमारा यह विश्वास नहीं है कि मंत्रद्रष्टा ऋषियोंकी ही सहायता अश्विदेवोंने की है। जिनका सहायता की ऐसा वेदमंत्र कहते हैं, उनमें कई मंत्रद्रष्टा हैं, इतना ही यहां कहना है।

वैदिक समयके आरोग्यमंत्री क्या क्या कार्य करते थे इसका पता इन तीन लेखोंसे लग सकता है। आजके राज्यमंत्री इससे बोध प्राप्त करें।